13

कहानी पठन क्यों और कैसे?

अश्विनी कुमार गर्ग*
मृदुला तिवारी**

कहानियों के काल्पनिक संसार में बच्चों का प्रवेश उनमें उत्साह, उत्सुकता, जिज्ञासा एवं मनोहरता का संचार करता है। बच्चों की तन्मयता प्रभावपूर्ण कहानी ही नहीं बल्कि उसके प्रभावी प्रस्तुतीकरण पर भी निर्भर करती है। प्रस्तुत आलेख में कहानी कथन के लिए अनिवार्य योग्यताओं की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है।

भाषा अभिव्यक्ति, समझ तथा संप्रेषण का माध्यम है। भाषा के माध्यम से ही हम शिक्षा के अन्य क्षेत्रों तथा विषयवस्तु तक पहुँच पाते हैं। भाषा के माध्यम से ही हम विचार कर पाते हैं एवं निर्णय ले पाते हैं। भाषा संप्रेषण, निर्णय लेने व उन पर काम करने, विचार करने, चिंतन करने, अभिव्यक्ति करने का एक साधन है। हम भाषा का उपयोग अपने अनुभवों को व्यवस्थित करने, दूसरों के विचारों, भावनाओं एवं इरादों को अभिव्यक्त करने में करते हैं। अपने अनुभव को व्यवस्थित करने में एवं उनकी व्याख्या करने में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। साथ ही हम भाषा का उपयोग चिंतन करने, विचार करने, तर्क करने आदि में करते हैं। भाषा का उपयोग समाज को समझने, उसके तौर-तरीकों पर चिंतन करने में भी किया जाता है। हम भाषा में सोचते हैं, महसूस करते हैं, डरते हैं, खुश होते हैं, सपने देखते हैं।

विद्यालय में आनेवाला प्रत्येक बच्चा स्वभाव से ही चंचल एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है। वह चुपचाप रहकर कोई कार्य नहीं करता है, अपितु स्वयं ही अथवा दूसरों से बात करते हुए विभिन्न क्रियाएँ करके सीखता है। वह जो कुछ अपने चारों ओर देखता और अनुभव करता है, उसी के आधार पर क्रिया-प्रतिक्रिया करता है। वातावरण से अर्जित ज्ञान से संबंधित अनेकानेक प्रश्न एवं जिज्ञासाएँ उसके मन को उद्वेलित करती रहती हैं, जिनका उत्तर वह येन-केन प्रकारेण प्राप्त करना चाहता है। यही वह उपयुक्त समय होता है, जब हम बच्चे के प्रश्नों का समाधान करें, जिससे वह पूर्णतः संतुष्ट हो सके। बच्चे को जब अपने प्रश्न का उपयुक्त उत्तर प्राप्त होता है, तो उसके मन में प्रश्न करने की क्षमता बढ़ती है तथा उसके साथ-साथ वह सूक्ष्मदर्शी होने लगता है।

* प्रवक्ता, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
** प्रवक्ता, क्षेत्रीय शैक्षिक प्रबंधन और प्रशिक्षण संस्थान, एलनगंज, इलाहाबाद

अकसर शिक्षक भाषायी क्षमताओं के विकास के लिए सीधे वर्ण, शब्द, वाक्य एवं गद्य पठन का सहारा लेता है। जबकि भाषा का शिक्षण बच्चे के परिवेश से प्रारंभ किया जाए, तो बच्चे में भाषा की सभी दक्षताओं का विकास समय के अनुसार होता जाता है। हम सभी इस अनुभव से गुज़र चुके हैं और जानते हैं कि जब से बच्चा थोड़ा बोलना सीखता है, तो वह अपने दादा-दादी, नाना-नानी आदि से कहानी सुनता है और सुनते-सुनते कभी-कभी सो भी जाता है और अगले दिन वह फिर कहानी सुनाने के लिए कहता है। यदि कहानी न सुनाई जाए, तो वह रोने भी लगता है। यहाँ एक शिक्षक के रूप में सोचने की आवश्यकता है कि बच्चे कहानी सुनना क्यों पसंद करते हैं? वे किस प्रकार की कहानी सुनना पसंद करते हैं? कहानी के दौरान वे किस प्रकार की प्रतिक्रिया करते है? क्या कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों को कहानी सुनाई जाएगी तो उनमें भाषा का विकास होगा? इन सभी के उत्तर स्वयं अपने जीवन के अनुभव के आधार पर मिल जाते हैं। हम जानते हैं कि कहानी बच्चों के भाषायी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह सिर्फ़ बच्चों में भाषा का ही विकास नहीं करती, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बच्चों के भाषा विकास में कहानी सुनना और सुनाना एक महत्वपूर्ण विधा है। यह बच्चे की मौखिक अभिव्यक्ति के साथ उसमें कल्पनाशीलता के विकास, जिज्ञासा उत्पन्न करने, किसी के बारे में सोचने, सही-गलत का अंतर कर पाने, सुनकर समझने, प्रतिक्रिया देने, बोली गई बातों को क्रमिक रूप से स्मरण करने तथा प्रमुख बातों को पकड़ पाने, विचारों और घटनाओं में कार्य-कारण संबंध पहचानना तथा उससे निष्कर्ष निकालने जैसे कौशलों का विकास करती है। कहानी बच्चे को स्वयं कुछ सोचने एवं निर्णय लेने की दिशा में प्रवृत्त करती है। पहली बार घर से विद्यालय पढ़ने आनेवाले बच्चे के लिए कहानी जहाँ विद्यालय में घर-सा माहौल पैदा करती है, वहीं उसको सुनकर बोलने, समझने जैसे कौशलों का विकास भी करती है।

भाषा शिक्षण में कहानी प्रस्तुत करने का तरीका भी है। एक शिक्षक कक्षा में कहानी सुनाता है, तो बच्चे उसमें रुचि नहीं लेते हैं वहीं उसी कहानी को जब दूसरा शिक्षक सुनाता है, तो बच्चे उस कहानी में रुचि लेते हैं तथा आनंद की अनुभूति करते हैं, अर्थात् कहानी सुनना एवं सुनाना भी एक कौशल है। कई शिक्षक एक नीरस कहानी को भी अपने प्रस्तुतीकरण के द्वारा रुचिकर बना देते हैं। एक शिक्षक के रूप में आवश्यक है कि कहानी का चयन बच्चे के स्तर, परिवेश तथा उसकी रुचि को ध्यान में रखते हुए करें। कहानी का प्रस्तुतीकरण हाव-भाव तथा बच्चों की सहभागिता पर आधारित हो, तो बच्चे कहानी सुनने में रुचि लेते हैं तथा आनंद की अनुभूति भी करते हैं। हम विद्यालय स्तर पर बच्चों को कहानी सुनाने तथा सुनने के लिए कुछ इस प्रकार की गतिविधियाँ कर सकते हैं–

कहानी का चयन एवं सुनाना– शिक्षक बच्चों को गोल घेरे में बैठा लें तथा स्वयं घेरे

में बैठें। फिर कहानी को हाव-भाव से सुनाएँ। यदि कहानी के बीच-बीच में जानवरों आदि की बात हो, तो उनकी आवाज़ निकालें तथा बच्चों से भी निकलवाएँ। यदि कहानी के बीच में कविता आए तो हाव-भाव से गाकर सुनाएँ। शिक्षक कहानी के आधार पर छोटे-छोटे प्रश्नों को बनाकर उन पर बच्चों से चर्चा कर सकता है। कहानी सुनाने में बच्चों की रुचि का विशेष ध्यान रखना चाहिए। प्रारंभ में कहानियाँ बच्चों के परिवेश से जुड़ी हों, तो बहुत ही अच्छा है क्योंकि बच्चा परिवेश की अधिकतर वस्तुओं से परिचित होता है और जब कहानी सुनाई जाती है, तो वह कहानी के पात्र का अपने परिवेश से संबंध बनाकर उस कहानी को समझता है और आनंद की अनुभूति करता है। अनुभव बतलाता है कि प्रारंभ में बच्चे जानवरों की कहानी सुनना ज़्यादा पसंद करते हैं। अत: कहानी के चयन में बच्चों की रुचियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

चित्र आधारित कहानी– बच्चों को नीचे दिए गए चित्र की तरह का कोई भी एक चित्र दिखाकर उस पर कहानी सुनाएँ।

कहानी सुनाते समय चित्र को बच्चों के पास रखें, ताकि बच्चे अच्छी तरह से देख सकें और कहानी के साथ चित्र के विभिन्न भागों को जोड़कर समझ सकें। पूरी कहानी

सुनाने के बाद पुनः चित्र दिखाकर बच्चों से चित्र के आधार पर कहानी कहने को कहें। कहानी से संबंधित काल्पनिक प्रश्न भी पूछें। फिर नया चित्र दिखाकर बच्चों को सोचने का अवसर दें तथा बच्चों को आपस में चर्चा करने का भी अवसर दें। साथ ही शिक्षक भी उस चर्चा में प्रतिभागी बनें। हम पाएँगे कि बच्चे किसी चित्र कहानी पर तरह-तरह के विचार रखकर कई प्रकार की कहानी एक ही चित्र के द्वारा प्रस्तुत करेंगे। शिक्षक बच्चों की चर्चा के बाद किसी बच्चे को बुलाकर उस पर कहानी सुनाने को कहें तथा शेष बच्चे उस कहानी के प्रस्तुतीकरण में सहयोग प्रदान करें। इस प्रकार कहानी सुनाने से जहाँ बच्चों को कहानी सुनने-सुनाने को मिलेगी, वहीं वे चित्र का बारीकी से विश्लेषण करना सीखते हुए कहानी बनाना एवं उसका प्रस्तुतीकरण करना सीख जाएँगे।

आधी-अधूरी कहानी सुनाना– शिक्षक को कुछ ऐसी कहानियों का भी चयन करना चाहिए कि यदि कहानी को बीच में ही रोक दिया जाए, तो बच्चे उस कहानी को आगे बढ़ाएँ या शिक्षक बच्चों से पूछ-पूछकर कि आगे क्या हुआ होगा, के आधार पर कहानी को आगे बढ़वाएँ। यह तभी संभव है, जबकि कहानी बच्चों के परिवेश से जुड़ी हो या बच्चे इससे मिलती-जुलती कहानी पहले कभी सुन चुके हों।

सचित्र कहानी पर बातचीत– शिक्षक दो-दो समूहों में एक-एक सचित्र कहानी वाला चित्र दे और उन्हें आपस में बात करने दे। ये चित्र ऐसे हों, जिन्हें जोड़ने पर कहानी बन सके। बच्चे चित्रों को आपस में जोड़ते हुए बातें करेंगे तथा आपस में चर्चा करके कहानी बनाएँगे। जब बच्चे कहानी का निर्माण कर लें, तो बड़े समूह में एक बच्चे को कहानी सुनाने तथा दूसरे बच्चे को उसे पूरा करने में सहयोग प्रदान करने के लिए कहें। जब बच्चा कहानी पूरी सुना दे, तो बड़े समूह में उस पर चर्चा कराएँ तथा अंत में शिक्षक बच्चों की बात को स्वीकार करते हुए अपना मत भी रखे। इस कहानी पर बच्चों से कक्षा में छोटे से नाटक का मंचन भी कराया जा सकता है।

विभिन्न चित्रों को इकट्ठा करना और कहानी सुनाना– शिक्षक विभिन्न समाचारपत्र एवं पत्रिकाओं में उपलब्ध चित्रों को बच्चों से किसी कहानी की भूमिका को ध्यान में रखकर एकत्र करवाएँ तथा फिर उसे चार्ट पेपर पर चिपकवाकर उसे कक्षा कक्ष में टँगवाकर बच्चों से उस पर चर्चा कर कहानी सुनाने के लिए कहें।

कहानी के आधार पर चित्रों का संग्रह करना– शिक्षक बच्चों से कोई स्थानीय कहानी सुने या सुनाए। सुनी या सुनाई गई कहानी के अनुसार चित्र संग्रह करने तथा उन्हें किसी चार्ट पेपर पर चिपकाकर कक्षा कक्ष में टाँगने के लिए कहें तथा बाद में किसी बच्चे से उस पर कहानी सुनाने के लिए कहे।

सपने सुनाना और सुनना– शिक्षक बच्चों को बताए कि कभी-कभी हम सोते समय रात में सपने देखते हैं। शिक्षक स्वयं आए हुए या काल्पनिक सपने को बच्चों को सुनाए तथा फिर बच्चों से जाने कि कल किसने-किसने

सपने को देखा है। जिन बच्चों ने सपने देखे हों, उनसे उनके सपने को कक्षा या समूह में सुने। यह गतिविधि बच्चे के स्तर के आधार पर होनी चाहिए।

कहानी को बढ़ाना (एक-एक वाक्य बोलकर कहानी बनाना)– शिक्षक सर्वप्रथम एक सरल वाक्य बोले तथा अगले बच्चे को वाक्य के आधार पर आगे का एक वाक्य बोलने को कहे, ताकि उससे कहानी बनती जाए। एक-एक कर सभी बच्चों को एक-एक वाक्य बोलने को कहें। जब सभी बच्चे बोल लें, तो शिक्षक उस कहानी को कक्षा कक्ष में सुनाए। चूँकि कहानी बच्चों द्वारा तैयार की गई है, तो निश्चित रूप से बच्चों को कहानी सुनने में आनंद आएगा। शिक्षक चाहे तो बच्चों द्वारा बोले गए वाक्य को अपनी याददाश्त के लिए कहीं लिख भी सकता है। यहाँ पर शिक्षक यह सुनिश्चित करे कि बच्चे को वाक्य बोलने की पूरी-पूरी छूट हो। इस प्रकार से अन्य वाक्य बोलकर बच्चों से छोटे-छोटे समूह में कहानी बनवाए तथा फिर बच्चों के समूह में से किसी एक बच्चे को पूरी कहानी सुनाने तथा बाकी बच्चों को उसमें सहयोग करने को कहे।

नाटक मंचन के आधार पर कहानी बनाना– शिक्षक विद्यालय में बड़े बच्चों द्वारा किए जाने वाले नाटक मंचन को छोटी कक्षा के बच्चों को दिखाए तथा फिर उस पर चर्चा करवाए। शिक्षक पहली बार उस नाटक मंचन के आधार पर बच्चों को कहानी सुनाए तथा बाद में इसी प्रकार के अन्य नाटक मंचन के आधार पर बच्चों से देखे गए नाटक मंचन पर कहानी सुने।

कहानी के आधार पर चित्रों का संग्रह करना सुनकर उसका नाटक मंचन करना– शिक्षक बच्चों को एक ऐसी कहानी सुनाए, जिसमें कुछ पात्र हों। फिर कहानी सुनाने के बाद बच्चों को उस कहानी में आए पात्रों में से एक-एक पात्र का चयन करने को कहे। शिक्षक स्वयं भी एक पात्र का चयन करे। शिक्षक बच्चों को कहानी सुनाने तथा पात्रों के चयन के बाद उस कहानी में आए पात्रों द्वारा कही गई बात को क्रम से बुलवाए तथा अंत में एक नाटक के रूप में कक्षा कक्ष के अंदर मंचन करवाए।

कविता के आधार पर कहानी सुनाना– शिक्षक बच्चों को एक कविता सुनाए तथा कविता सुनाने के बाद उस कविता को बच्चों को कहानी के रूप में पहले समझने दे, फिर स्वयं उसे कहानी के रूप में सुनाए। शिक्षक बच्चों को जो कविताएँ आती हों, उनसे एक-एक करके कविता सुने तथा कहानी के रूप में सुनाने को भी कहे। शिक्षक ऐसे भी कर सकते हैं कि कक्षा के किसी बच्चे को कविता सुनाने को कहें तथा दूसरे बच्चे को उसे कहानी के रूप में प्रस्तुत करने को कहें।

किसी देखे गए कार्यक्रम (फिल्म, टी.वी. कार्यक्रम आदि) को कहानी के रूप में प्रस्तुत करना– बच्चे रामलीला, टी. वी. सीरियल, फिल्म आदि देखते हैं। शिक्षक बच्चों से पहले जाने कि उन्होंने कल या इसके पहले कौन-सी फिल्म, सीरियल आदि देखा है। उस सीरियल में कौन-कौन था? अंत में बच्चों को उस फिल्म या सीरियल

को संक्षिप्त रूप में सुनाने को कहे। यही संक्षिप्त रूप ही तो कहानी बनती है। शिक्षक बच्चों से उस पर चर्चा करे। इस प्रकार शिक्षक बच्चों द्वारा देखे जानेवाले सीरियल आदि पर चर्चा करके बच्चों से उस पर कहानी सुन सकता है।

इस प्रकार कहानी जहाँ बच्चों में विद्यालय आने के प्रति रुचि उत्पन्न करती है, वहीं बच्चे को किसी बात को सुनने, समझने तथा स्वयं में समझ के आधार पर अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है। कहानी बच्चों में पठन क्षमता के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अत: एक शिक्षक के रूप में आवश्यक है कि हम कहानी पठन की आवश्यकता एवं महत्त्व से परिचित होकर बच्चों में इस विधा का विकास करें, ताकि बच्चे में भाषा शिक्षण के प्रति रुचि बढ़े तथा उसकी भाषा का विकास हो।

❑❑❑